NALANDA OPEN UNIVERSITY

Course : **M.A. Psychology, Part-II**

Paper : **Paper-XII**

Prepared by : **Dr. (Prof.) Prabha Shukla**
Retd. Professor of Psychology, Patna University and
Chief Co-ordinator, School of Social Sciences,
Nalanda Open University

Topic : **मूल्य-आधारित शिक्षा**
(Value-based Education)

मूल्य-आधारित शिक्षा
(Value-based Education)

10.1 परिचय (Introduction)

मूल्य एक अर्जित व्यवहारात्मक पैटर्न (behavioural pattern) होता है तथा इसका बीजारोपण सामान्य व्यक्ति के आरंभिक समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान हो जाती है। अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि मूल्य के विकास में माता-पिता, पास-पड़ोस तथा शिक्षकों की अहं भूमिका होती है। जिन बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा मिल पाती है, वे एक श्रेष्ठ एवं उत्तम व्यक्तित्व विकसित कर पाते हैं और समाज एवं परिवार दोनों के लिए एक धरोहर साबित होते हैं।

12.2 मूल्य का अर्थ (Meaning of Value)

मूल्य (Value) एक अनोखा शाब्दिक संप्रत्यय है जो व्यक्ति या समूह द्वारा विशिष्ट तरह के वस्तु क्रिया (acts) तथा अवस्थाओं (conditions) को दिये गये महत्व (worth) से संबंधित होता है। मूल्य के कम से कम तीन विमाएं होती हैं-

(i) पहला विमा को परिमाजात्मक तत्व (quantitative element) कहा जा सकता है जिससे यह पता चलता है कि व्यक्ति किसी वस्तु या क्रिया को कितना महत्व देता है।

(ii) दूसरी बिमा का संबंध लचीलापन (elasticity) के गुण से होता है जो यह बतलाता है कि व्यक्ति अपने आदमी (ideas) को किस सीमा तक बरकरार रखता है।

(iii) मूल्य के विभिन्न तंत्रों (systems) में कितना अंतरसंबंधता (interrelatedness) है जिसे मनोवैज्ञानिकों द्वारा मूल्यों का पदानुक्रम (heirarcy of values) कहा जाता है।

एक सामाजिक संप्रत्यय के रूप में मूल्यां (values) सममूच में शैक्षिक प्रक्रिया (educative process) में सम्मिलित होता है क्योंकि वह समाज जिसका कम छात्र तथा स्कूल होता है, का एक मुख्य तत्व होता है। सामान्यत: छात्रों में मूल्य का विकास कई तरह के संतोषप्रद (satisfying) तथा असंतोषप्रद अनुभूतियों, व्यवहार के परिणाम का प्रेक्षण, मानव प्राणी के व्यवहार में ज्ञान पुनर्बलन (reinforcement) आदि के संयुक्त प्रभाव से होता है।

10.3 बच्चों के लिए मूल्य आधृत शिक्षा (Value based Education for Children)

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों का यह हाथ रहा है कि मूल्यों को सिखलाया जा सकता है और मूल्य-आधृत शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व के सर्वांगिण विकास के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। कई अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि जब छात्रों को स्कूली जिंदगी में संतुष्टि (satisfaction) होता है, तो उससे छात्रों में मूल्यों का निर्माण तेजी से होता है। अगर छात्र यह समझने लगते हैं कि शिक्षा से उनके लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद मिलेगी तो वे शिक्षा के उचित एवं महत्वपूर्ण समझने लगते हैं। मूल्य विकास को संवृद्ध करने के लिए स्कूल में शिक्षक छात्र का संबंध को घनिष्ठ तथा दोस्ताना (Friendly) होना आवश्यक है। ऐसा संबंध बच्चों को विभिन्न तरह के अधिगम (learning) को स्वीकार करने में मदद करता है तथा शिक्षक को अपना सम्मान देने तथा तादात्मय (identification) के कारण सामूहिक मूल्य (group values) के निर्माण का भी रास्ता खोल देता है।

कोहबर्ग (Kohlberg 1976) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है कि यदि बच्चों को स्कूल में नैतिक शिक्षा, नैतिक मूल्य आदि का पाठ पढ़ाया जाता है तो उनसे उनके व्यक्तित्व में सार्थक घनात्मक परिवर्तन (significant positive change) आते हैं। उन्होंने यह बतलाया है कि बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास तीन चरणों में होता है-

(1) प्राक्रूढ़िगत नैतिकता (Pre Conventional Mortality)

(2) रूढ़िगत नैतिकता (Conventional mortality)

(3) उत्तररूढ़िगत नैतिकता (Post-conventional)

प्राक्रूढ़िगत नैतिकता का सबसे निचला स्तर होता है। इस स्तर पर नैतिक मूल्यों का आन्तरिकरण (interrrelization) नहीं दिखलाता है। नैतिक मूल्यों एवं तर्कणा (reasoning) का नियंत्रण बाह्य पुरस्कार (reward) तथा दंड (Punishment) से होता है रूढ़िगत नैतिकता दूसरा स्तर या बीच का स्तर की नैतिकता होती है और यहां नैतिक मूल्यों के विकास में आन्तरीकरण (inter realization) एक तरह का मघ्यवर्ती (intermediate) होता है क्योंकि बच्चों कुछ आन्तरिक मानकों (internal standard) से तो निदेशित होते हैं परंतु वे मूलत: दूसरों का ही मानक (external standard) होते हैं। उत्तररूढ़िगत नैतिकता (post conventional morality) उच्चतम स्तर होता है और यहां नैतिकता पूर्णत: आन्तरिकृत (interrelized) होता है और किसी तरह का बाह्यमानक (external standards) पर आधृत नहीं होता है।

स्कीनर (skinner, 1942), ब्लासी (Blasi, 1995) ने भी अपने-अपने शोध कार्यों पर यह दाबा किया है कि मूल्य आधृत शिक्षा विशेषकर नैतिक मूल्य आधृत शिक्षा से बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में मदद मिलती है। विलिंगटन (Willinton, 1955) के अनुसार स्कूल में मूल्य आधृत शिक्षा निम्नांकित कारणों से महत्वपूर्ण माना जाता है-

(i) मूल्य आधृत शिक्षा से बच्चों में संज्ञानात्मक विकास (cognitive development) में मदद मिलती है।

(ii) मूल्य आधृत शिक्षा बच्चों में उत्तम आचरण को मजबूत करता है।

(iii) मूल्य आधृत शिक्षा बच्चों में नैतिकता की नींव को विस्तृत एवं मजबूत करता है।

(iv) मूल्य आधृत शिक्षा से बच्चों में नयी-नयी शैक्षिक अभिरूचियां जन्म लेती है।

(v) मूल्य आधृत शिक्षा बच्चों को उत्तम अन्तःक्रिया के लिए प्रोत्साहित करता है।

राईट (Wright, 1950) कक्षा में बच्चों को दी गयी मूल्य आधृत शिक्षा को मजबूत करने के लिए निम्नांकित तथा अनुभवों से संबद्व होना चाहिए।

(i) कक्षा में जिन मूल्यों की चर्चा की जानी चाहिए उसे छात्रों के समूह की अभिरूचि (interest) आवश्यकता तथा अनुभवों से संबद्व होना चाहिए।

(ii) मूल्यों से संबंध मौलिक ज्ञान (basic knowledge) को छात्रों को उपलब्ध करना चाहिए।

(iii) छात्रों की आवश्यकताओं (needs) तथा वास्तविकता से संबंधित परिस्थिति से अधिगम संबंधित होना चाहिए।

(iv) छात्रो को जिन समस्याओं को दी जानी चहिए उसमें कुछ द्वन्द्वात्मक मूल्य (conflicting values) भी होना चाहिए।

(v) मूल्यों के वर्तमान तथा भविष्य के परिणामों का मुक्त अभिव्यक्ति (free expression) होना चाहिए।

मूल्य आधृत शिक्षा को वर्ग या कक्षा में देने के लिए छात्रों के मौजूदा चिन्तनों का सर्वे करना चाहिए। इसका फायदा यह होता है कि छात्र उन सारे मूल्यों से अवगत हो पाते हैं जो वर्तमान के लिए लाभप्रद होते हैं तथा भविष्य के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

10.4 बच्चों में मूल्य के विकास में स्कूल प्राधिकारियों एवं माता-पिता की भूमिका (Role of school authority and parents in the development of values in children)

स्कूली छात्रों के मूल्य के विकास में कई लोगों की अहम् भूमिका होती है जिसमें स्कूल प्राधिकारियों (School authorities) तथा माता-पिता (Parents) की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। इन दोनों तरह के व्यक्तियों की भूमिका का वर्णन निम्नांकित है-

(क) स्कूल प्राधिकारियों का मूल्य के विकास में भूमिका (Role of School authorities in development of value)

जब कभी भी शिक्षक कक्षा में पढ़ाते हैं या अन्य दूसरे जगहों पर छात्र के सम्पर्क में आते हैं इससे छात्रों पर उसका ऐसा प्रभाव पड़ता है जिसे छात्रगण काफी महत्व देते हैं। इसमें कोई शक नहीं है बच्चों में जो शैक्षिक अनुभूतियां होती है, उनसे मूल्य निर्माण में मदद मिलती है। स्कूल के पाठ्यक्रम में मूल्य विकास के लिए पर्याप्त सामग्री रहते हैं जिनका उपयोग करके बच्चों में मूल्य का यथोचित विकास होता है। जब बच्चों को स्कूली जिंदगी में संतुष्टि होती है, तो उससे बहुत जल्द ही उनमें मून्य निर्माण होती है। अत: यह आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चों को स्कूली जिंदगी में यह जाने की उपलब्धि खासकर सार्थक उपलब्धि से एक महत्वपूर्ण चीज होती है और उससे फिर उनमें मूल्य निर्माण की प्रक्रिया तेजी से होती है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि जब शिक्षक तथा छात्र के बीच उत्तम संबंध होता है तो इससे भी मूल्य निर्माण की प्रक्रिया तेजी से होती है। इसके अतिरिक्त निम्नांकित कुछ ऐसे उपाय/साधन हैं जिसके माध्यम से स्कूली बच्चों में मूल्य के विकास की प्रक्रिया तेजी से होती है।

(i) जब छात्रों के लिए तैयार किया पाठ्यक्रम (curriculum) में विविधता (diversity) हो।

(ii) जब छात्रों का आपस में मधुर संबंध हो।

(iii) जब शिक्षक एवं छात्रों में खुलकर अंत:क्रिया (interaction) होती है।

(iv) जब शिक्षक छात्रों में आत्म सम्मान बढ़ाने के लिए सक्रिय हो।

(v) जब छात्र को शिक्षक से शर्तरहित सम्मान (unconditional respect) मिलता है।

(vi) जब स्कूली पर्यावरण ऐसा हो जिसमें बच्चों को क्रीड़ा (sports) को संबंध कौशलों को दिखलाने का माहौल उत्तम हो।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययनों से यह पता चला है कि जब बच्चे कक्षा में परिचर्चा (discussion) करते हैं तो उनसे भी मूल्य विकास की प्रक्रिया प्रभावित होती है परंतु इससे कुछ खास तरह के मूल्य (value) अन्य मूल्यों (values) की तुलना में अधिक तेजी से विकसित होती है। स्टेन्डलर (Stendler, 1950) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है कि ऐसी स्कूली अनुभूतियों से बच्चों में उत्तरदायित्व तथा ईमानदारी (honesty) का विकास तेजी से होता है परंतु निष्ठा (loyality), नैतिक हिम्मत (moral courage) तथा दोस्ती का मूल्य इतना तेजी से विकसित नहीं होता है।

(ख) बच्चों के मूल्य विकास में माता-पिता की भूमिका (Role of parents in the development of values among children)

बच्चों में मूल्य विकास में न सिर्फ स्कूल प्राधिकारियों (School authorites) का ही भूमिका है बल्कि माता-पिता की अहं भूमिका होती है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि निम्नांकित कारकों पर घ्यान देकर परिवार के सदस्यों विशेषकर माता-पिता बच्चों में मूल्य को विकसित करने में अहं भूमिका निभा सकते हैं।

(i) माता-पिता द्वारा बच्चों को स्नेह शर्त्तहीन सम्मान दिया जाना चाहिए।

(ii) माता-पिता द्वारा बच्चों में स्वतंत्रता प्रशिक्षण (independent training) दिया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में माता-पिता को यह कोशिश करनी चाहिए कि बच्चे अपने कार्य अधिक-से-अधिक स्वयं ही कर सके। सेकर्ड (Secord, 1960) के अनुसार ऐसे बच्चों जिन्हें ऐसी प्रशिक्षण नहीं मिली होती है श्रेष्ठ तो होता ही है साथ उनमें ईमानदारी निष्ठा (loyality) तथा दोस्ती (Friendliness) जैसे मूल्यों का विकास भी तेजी से होता है।

(iii) बच्चों को माता-पिता द्वारा पर्याप्त पारिवारिक उत्तेजन (family stimulation) दिया जाना चाहिए। इससे उनका संज्ञानात्मक विकास तो होता ही है तथा साथ ही तरह-तरह के मूल्यों को विकसित होने की संभावना मजबूत हो जाती है।

(iv) बच्चों को माता-पिता द्वारा पर्याप्त पारिवारिक उत्तेजन (Family stimulation) दिया जाना चाहिए। इससे उनका संज्ञानात्मक विकास तो होता ही है तथा साथ ही तरह-तरह के मूल्यों को विकसित होने की संभावना मजबूत हो जाती है।

(v) माता-पिता का आपसी संबंध से भी बच्चों के मूल्यों का विकास प्रभावित होता है। कुछ माता-पिता प्रायः आपस में झगड़ते रहते हैं जिससे बच्चे काफी प्रभावित होते हैं। उनमें मानसिक द्वन्द्व (mental conflict) की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसे बच्चों में मूल्यों का विकास अवरूद्व हो जाता है या विलम्बित हो जाता है, दूसरे तरफ, जैसा कि ऑलपोर्ट (Aliport, 1989) ने अपने अघ्ययन के आधार पर बतलाया है, जब माता-पिता का आपस में सौहार्दपूर्ण संबंध होता है, तो इससे बच्चों पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है तथा इससे उसमें उत्तम मूल्यों का विकास होता है।

10.5 सारांश (Summary)

मूल्य एक ऐसा संप्रत्यय है जिससे व्यक्ति का समूह द्वारा किसी वस्तु, घटना, क्रिया एवं अवस्थाओं को दिया जाने वाला महत्व से होता है। मूल्य के कई तरह के होते हैं और मूल्यों का विकास से व्यक्तित्व का सर्वांगिण विकास होता है। मूल्य विकास में शिक्षकों की अहं भूमिका होती है क्योंकि वे कक्षा में मूल्यों की शिक्षा देरी से उन्त बनाने की कोशिश करते हैं। इसके अतिरिक्त माता-पिता द्वारा भी बच्चों में मूल्य विकास की जाती है। माता-पिता पारिवारिक तथा घरेलू वातावरण की अनुकूल बनाकर बच्चों में मूल्य विकास करते हैं।

10.6 अभ्यास के लिए प्रश्न (Questions for Exercise)

1. मूल्य से आप क्या समझते हैं? मूल्य आधारित शिक्षा की विशेषता बतलावें।

   What do you mean by values? Describe the characteristics of value-based education.

2. मूल्य आधृत शिक्षा क्या है? बच्चों में मूल्य निर्माण में शिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डालें।

   What is value-based education ? Throw light upon the role of teachers in value development of children.

3. मूल्य आधृत शिक्षा का अर्थ बतलावें। मूल्य निर्माण में माता-पिता की भूमिका पर प्रकाश डालें।

   Give the meaning of value based education. Throw light upon the role of parents on value formation.